अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति और सामान्य जाति के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन"

सुधा राजपूत
बी0एड0 विभाग,श्रीवार्ष्णेय कॉलेज, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

प्रत्येक समाज में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति होती है और यह सामाजिक–आर्थिक स्थिति व्यक्ति की जाति, लिंग, क्षेत्र, शिक्षा, पद, कार्य, व्यवसाय एवं आय इत्यादि के आधार पर निर्धारित होती है। इस प्रकार की व्यवस्था को सामाजिक स्तरीकरण की संज्ञा दी जाती है।है। इस तरह समाज की स्तरीकरण व्यवस्था में सम्पूर्ण हिन्दू समाज, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र आदि जातियों में विभक्त है। इन सभी जातियों के लोगों को निश्चित क्रम में ही सम्मान मिलता रहा है। परन्तु वर्तमान समय में किसी भी व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति केवल जाति के आधार पर ही निर्धारित नहीं की जाती बल्कि उसकी शिक्षा, कार्यक्षमता, व्यवसाय तथा आय का इस पर विशेष प्रभाव पड़ता है। इनके आधार पर प्राप्त अंकों को एक साथ जोड़कर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के स्तर को निर्धारित किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर `का विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर का अध्ययन किया है।

समस्या का कथन– अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति और सामान्य जाति के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य –विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति और सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना–1. विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: Sudha Rajput

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

2. विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3.विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4.निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5.औसत सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित, पिछड़ी तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6.उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित, पिछड़ी तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :–प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त शोधविधि "सर्वेक्षण विधि" का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्श :–प्रस्तुत शोध कार्य के लिये अलीगढ़ जनपद के उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर से सम्बन्धित छात्र छात्राओं को क्रमानुसार यादृच्छिकरण प्रतिदर्श विधि द्वारा उन्हें प्रतिदर्श के रूप में चुना गया है इस प्रकार प्रस्तुत शोध अध्ययन में 360 छात्रों एवं 360 छात्राओं को चुना गया है प्रस्तुत अध्ययन में केवल अलीगढ़ जनपद के 720 विद्यार्थियों को लिया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :– वर्तमान अनुसंधान कार्य के लिये जिन परीक्षणों का चयन किया गया है वे इस प्रकार है

सामाजिक–आर्थिक स्तर का मापन करने के लिए मापनी :–डॉ0 राजीव लोचन भारद्वाज की सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी ।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Sudha Rajput
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

सामाजिक बुद्धि का मापन करने के लिये मापनी :–डॉ0एन0के0 चड्ढा तथा श्रीमती उषा गनेशन की सामाजिक बुद्धि मापनी

प्रदत्त विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोध कार्य में एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये विशेष रूप से मध्यमान, मानक विचलन एवं मानक त्रुटि सांख्यिकीय प्रविधि लगायी गयी है। दो समूहों के मध्य अंतर की सार्थकता को ज्ञात करने के लिये 'टी' परीक्षण को लगाया गया है तथा दो से अधिक समूहों के मध्य अंतर की सार्थकता को ज्ञात करने के लिये "एनोवा" परीक्षण को लगाया गया है इन्हीं के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये।

परिकल्पना का सत्यापन

परिकल्पना नं0 1 : विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं0 1

प्रसरण विश्लेषण के परिणामों का सारांश

क्रम	स्त्रोत	d.f.	S.S.	M.S.	F-अनुपात
1.	समूह के मध्य	2	612.4408	306.22041	5.8714
2.	समूह के अन्दर	237	12360.5875	52.154377	.01 स्तर पर सार्थक

तालिका नं0 1 के विवरण से स्पष्ट है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर उच्च, औसत तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्यमानों में प्रदर्शित अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Sudha Rajput
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

परिकल्पना नं0 2 : विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं0 2

प्रसरण विश्लेषण के परिणामों का सारांश

क्रम	स्त्रोत	d.f.	S.S.	M.S.	F-अनुपात
1.	समूह के मध्य	2	691.2758	345.6329	5.1176
2.	समूह के अन्दर	237	16006.5375	67.5381	.01 स्तर पर सार्थक

तालिका नं0 2 के विवरण से स्पष्ट है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर उच्च, औसत तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के मध्यमानों में प्रदर्शित अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है।

परिकल्पना नं0 3 :–विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

तालिका नं0 3

प्रसरण विश्लेषण के परिणामों का सारांश

क्रम	स्त्रोत	d.f.	S.S.	M.S.	F-अनुपात
1.	समूह के मध्य	2	1411.27	705.635	13.3328
2.	समूह के अन्दर	237	12542	52.9217	.01 स्तर पर सार्थक

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Sudha Rajput
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

तालिका नं0 3 को देखने से स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति के उच्च, औसत तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि के मध्यमानों में अवलोकित अन्तर .01 स्तर पर सार्थक हैं।

परिकल्पना नं0 4 :–निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

तालिका नं0 4

प्रसरण विश्लेषण के परिणामों का सारांश

क्रम	स्त्रोत	d.f.	S.S.	M.S.	F-अनुपात
1.	समूह के मध्य	2	757.3853	378.6927	4.2457
2.	समूह के अन्दर	237	21139.0105	89.1941	.01 स्तर पर असार्थक

तालिका संख्या–4 के परिणामों से स्पष्ट होता है कि सामाजिक बुद्धि के सन्दर्भ में निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति सामान्य जाति के विद्यार्थियों के मध्यमानों में अन्तर .01 स्तर पर सार्थक नही है अत: परिकल्पना नं0 4 निराकरणीय परिकल्पना .01 स्तर पर स्वीकार होती है। तार्किक आधार पर हम कह सकते हैं कि तीनों समूह के विद्यार्थियों में जातिगत विभिन्नता होने के बावजूद भी सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं है। जैसा कहा गया है कि अर्थ के बिना व्यक्ति का सब कुछ शून्य रहता है। निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं चाहे वे किसी जाति के हो उनकी स्थितियाँ लगभग समान होती हैं। उन्हें अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिये भी

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Sudha Rajput
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

कठिन संघर्ष करना पड़ता है इसी कारण तीनों युग्मों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं देखा गया है।

परिकल्पना नं0 5 :–औसत सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित, पिछड़ी तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

तालिका नं0 5

प्रसरण विश्लेषण के परिणामों का सारांश

क्रम	स्त्रोत	d.f.	S.S.	M.S.	F-अनुपात
1.	समूह के मध्य	2	864.475	432.2375	11.2547
2.	समूह के अन्दर	237	9101.9875	38.4050	.01 स्तर पर सार्थक

तालिका नं0 5 के विवरण व ग्राफ पर विहंगम दृष्टि डालने से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक बुद्धि के सन्दर्भ में औसत सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित, पिछड़ी व सामान्य जाति के विद्यार्थियों के मध्यमानों में अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। अतः हमारी परिकल्पना नं05 को निरस्त किया जाता है। हम कह सकते हैं कि सामाजिक–आर्थिक स्तर समान होने के बावजूद भी जातिगत विभिन्नता के आधार पर सामाजिक बुद्धि में अन्तर दृष्टिगोचर होता है।

परिकल्पना 6 :–उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित, पिछड़ी तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Sudha Rajput
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

तालिका नं0 6

प्रसरण विश्लेषण के परिणामों का सारांश

क्रम	स्त्रोत	d.f.	S.S.	M.S.	F-अनुपात
1.	समूह के मध्य	2	494.41	247.205	5.4916
2.	समूह के अन्दर	237	10668.562	45.01503	.01 स्तर पर सार्थक

तालिका नं0 6 के विवरण व ग्राफ पर विहंगम दृष्टि डालने से यह स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति व सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के मध्यमानों में अन्तर .01 स्तर पर सार्थक हैं। इनके मध्यमानों में अन्तर संयोगवश नहीं हैं। अतः हमारी परिकल्पना नं0 6निरस्त की जाती है

निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि

1- विद्यार्थि किसी भी जाति का हो, सामाजिक- आर्थिक आधार पर भिन्नता प्रकट होती है।जो छात्र- छात्रायें उच्च सामाजिक- आर्थिक स्थिति के हैं वे अपनी विकसित स्थिति के कारण सामाजिक परिदृश्यों में किस पकार के सहयोग सामंजस्य, स्नेह, सात्मीकरण, सहानुभूति जैसे भावों को विकसित करने में सक्षम होते हैं मध्य व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्रायें क्रमशः इस सन्दर्भ में प्रायः इन से पीछे रह जाते हैं क्योंकि उनके समक्ष अनेक ऐसी समस्यायें होती हैं जो कि उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता को किसी न किसी रूप में बाधित करती हैं

2- सामाजिक–आर्थिक स्तर समान होने के बाबजूद भी जातिगत विभिन्नता के आधार पर सामाजिक बुद्धि में अन्तर दृष्टिगोचर होता है। इसका कारण यह है कि हमारे देश में जाति व्यवस्था के अन्तर्गत विभिन्न जातीय समूहों की उच्चता और निम्नता के आधार पर उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों का भी निर्धारण होता है जाति व्यवस्था के अन्तर्गत सामान्य जाति के सदस्यों की सामाजिक प्रतिष्ठा जन्मजात होती है समाज में उनका स्थान सदैव उच्च रहता है जबकि इसके विपरीत पिछड़ी व अनुसूचित जाति को सामाजिक दृष्टि से निम्न समझा जाता है विभिन्न कारकों के उद्गम के परिणाम स्वरूप जाति व्यवस्था अवश्य निर्बल व परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रही है लेकिन इतनी अधिक विपरीत परिस्थितियों होने के बाबजूद भी जाति प्रथा आज भी विद्यमान है शायद यही कारण है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर समान होने के बाबजूद सबसे अधिक सामाजिक बुद्धि सामान्य जाति के विद्यार्थियों की उसके बाद पिछड़ी जाति तथा सबसे कम सामाजिक बुद्धि अुनसूचित जाति के विद्यार्थियों में पायी गयी।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: Sudha Rajput

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.गुप्ता, एस0पी0	सांख्यिकीय विधियाँ, प्रकाशक शारदा पुस्तक भवन 11, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद
2. कुंमार, एन0 एवंजोशी एम0	शिक्षा एक सामाजिक उपव्यवस्था (2008), जयपुरः नई शिक्षा 12, उगमपथ, बनी पार्क, पृ0सं0 14–15
3. शर्मा, आर0ए0	अधिगम एव विकास के मनो सामाजिक आधार (2007), मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो,पृ0सं0206–208
4. सक्सेना एण्ड श्रीवास्तव	भारतीय समाजशास्त्र
5-Chauhan, B.R.	Scheduled Caste and Education, Anu Prakashan Meerut, 1975
6-Albrecht, K.	Social Intelligence, The New Science of Success Book Description, New York, Pfeiffer Publisher
7-Churey, G.S.	Caste, Class and Occupation, Popular Book Depot, Bombay, 1961
8-D. Goleman (2006)	Social Intelligence the new Science of human relationship, New York: Bantam Book, p. 84.
9-Kuppuswamy, B.	Social Change in India, Vikash Publishing House, Ghaziabad, 1979.
10-Brar Kaur Paramjeet	A Comparative Study of Social Intelligence between General and Scheduled Caste Students, *Indian Journal of Experimentation and Innovation in Education*, Vol. 3, Issue 2, March 2014.
11-Behra, A.P.	Rural-Urban Differences in Intelligence, *The Primary Teacher*, 18, 40-48, 1993.
12-Gananadevan, R.	Social Intelligence of Higher Secondary Students in relation to their Socio-economic Status Community, Guidance and Research, 24(3), 340-46.

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: Sudha Rajput

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022